संपादकीय...

धनबल का छल

आखिरकार बड़े पैमाने पर अवैध नकदी की बरामदगी के बाद चुनाव आयोग ने तमिलनाडु के वेल्लोर लोकसभा क्षेत्र में मतदान स्थगित किया है। आयोग ने इस बाबत राष्ट्रपति को सिफारिश भेजी थी। मंजूरी मिलने के बाद यह फैसला आया। तमिलनाडु में मतदाताओं को प्रलोभन देने के लिये नकदी व सामान देने की सुनियोजित परिपाटी रही है। आयोग तमिलनाडु को लेकर विशेष रूप से सतर्क रहता है। पार्टी कार्यालय से करोड़ों की नकदी बरामदगी के बाद डीएमके नेत्री कनिमोझी के घर पर आयकर विभाग ने छापा मारा था। बुधवार को भी आयोग व आयकर विभाग की टीम ने नकदी बरामद की और विरोध कर रहे कार्यकर्ताओं पर हवाई फायर करना पड़ा। बरामद नकदी बाकायदा लिफाफों में थी, जिसमें वार्ड व मतदाताओं के नंबर दर्ज थे। चुनाव आयोग तमिलनाडु व पुडुचेरी की चालीस सीटों को पहले ही चुनावी खर्च की दृष्टि से संवेदनशील घोषित कर चुका है। इससे पहले चुनाव आयोग 2017 में आरके नगर सीट पर मतदाताओं को लुभाने व बड़ी मात्रा में नकदी बरामद होने के बाद चुनाव रद्द कर चुका है। इसी तरह वर्ष 2016 में तंजावुर सीट का चुनाव मतदाताओं को रिश्वत देने की शिकायतों के बाद रद्द किया गया था। विडंबना यह है कि वोट खरीदने का जो खेल पहले दक्षिण भारत के तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में जारी था, उसने आज पूरे देश को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। कहीं नकदी के रूप में तो कहीं सामान और अन्य सुविधाओं के वितरण के रूप में। जिसमें शराब की बड़ी भूमिका होती है। प्रथम चरण के मतदान से पहले चुनाव आयोग की रिपोर्ट बताती है कि विभिन्न विभागों की कार्रवाई में अरबों रुपये की नकदी, नशीली दवाइयों, शराब व सोने की बरामदगी हुई है। वोट के लिये नोट की कुत्सित कोशिश हमारे लोकतंत्र पर एक दाग की तरह है जो अपरिपक्व मतदाता और भ्रष्ट राजनीति की बदरंग तस्वीर दर्शाता है। यही वजह है कि मंगलवार को वोट के लिये रिश्वत देने पर रोक लगाने के बाबत सुप्रीमकोर्ट में दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई और न्यायमूर्ति संजीव खन्ना की पीठ ने याचिकाकर्ता के. के. रमेश की याचिका पर चुनाव आयोग से जवाब मांगा है। विडंबना ही है कि चुनाव में होने वाला अथाह खर्च लोकतंत्र के लिये एक बीमारी के रूप में सामने आ रहा है। जिससे काले धन का प्रवाह बढ़ा है और आम आदमी चुनाव प्रक्रिया से बाहर हो गया है।

चुपचाप बन गया चीन पोलर पॉवर

पुष्परंजन

अंटार्कटिका में सब कुछ खामोशी से चल रहा था। आज पता चला कि चीन पोलर पॉवर बन चुका है। इस हफ्ते बुधवार को शंघाई से एक आइस ब्रेकर शिप को चीन ने रवाना किया है। 'शुएलौंग-टू' नामक इस जहाज पर 334 लोग सवार हैं। शुएलौंग का मतलब होता है, 'बर्फीला ड्रैगन!' यह जहाज रोस सागर के 'टेरा नोवा बे' पर डेरा डाल देगा। साउथ पोल पर इस तरह का यह पांचवां द्वीप है, जहां रिसर्च के बहाने चीन का कब्ज़ा होगा।

चीन ने कहा, 'इस पांचवें बेस पर हम 2022 तक शोध करेंगे।' 'शुएलौंग-टू' बर्फ तोड़ने वाला जहाज है, जिसे शंघाई के चियांगनान शिपयार्ड में 2016 से बनाया जा रहा था। इसके निर्माण में फिनलैंड के 'आकेर आर्कटिक टेक्नोलॉजी' और 'चाइना स्टेट शिपिंग कॉरपोरेशन' के तकनीशियन साझा रूप से काम कर रहे थे। 'शुएलौंग-टू' दुनिया का पहला आइस ब्रेकिंग शिप है, जो आगे और पीछे से बर्फ़ को तोड़ पाने में सक्षम है। ओरिजिनल 'शुएलौंग' 1994 में यूक्रेन से मंगाया गया था, जिसे चीन 2013 तक उन्नत करता रहा। 'शुएलौंग-टू' के बन जाने से दुनिया के बहुत सारे देश चीन पर आश्रित हो जाएंगे, जो दक्षिणी ध्रुव से शार्टकट रास्ता चाह रहे थे। नाभिकीय ऊर्जा से संचालित 'शुएलौंग-टू' में मिनिएचराइज्ड रिएक्टर लगे हुए हैं। चीन इसकी सफलता के बाद नाभिकीय क्षमता से लैस एयरक्राफ्ट कैरियर के निर्माण में लगने वाला है। यह भविष्य का सुपर युद्धपोत होगा, जिसमें दुनिया की सारी सुविधाएं होंगी। कई लाख लोगों को जितनी बिजली की ज़रूरतें होंगी, वे सुपर युद्धपोत के माध्यम से पूरी की जाएंगी। बहुत पहले सोवियत संघ ने उल्यानोवस्क शिपयार्ड में नौ नाभिकीय आइस ब्रेकिंग जहाज विकसित किये थे। अप्रैल 2018 में रूस ने खुलासा किया कि 'अकादमिक लोमोनोसोव' आइस ब्रेकर रिएक्टर से हम 70 मेगावाट बिजली पैदा कर रहे हैं। सेंट पीटर्सबर्ग शिपयार्ड में निर्मित रूस का 'अकादमिक लोमोनोसोव' दुनिया का अकेला फ्लोटिंग पॉवर यूनिट है, जिससे दो लाख लोगों की ऊर्जा ज़रूरतें पूरी हो सकती हैं। इसके मुक़ाबले भारत कहां खड़ा है? पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव शैलेश नायक ने मार्च 2015 में जानकारी दी थी कि स्पेन से हम पोलर रिसर्च वैसल (पीआरवी) आने वाले तीन वर्षों में हासिल कर लेंगे, जिससे 18 हज़ार नॉटिकल माइल तक सफर और डेढ़ मीटर मोटी बर्फ की परत काटना आसान होगा। मंत्रालय ने इसके लिए 1 हज़ार 50 करोड़ आवंटित भी कर रखे थे। उस समय तक भारत के पास छह 'पीआरवी' उपलब्ध थे, जिनकी क्षमता 10 हज़ार नॉटिकल माइल का सफर और 40 सेंटीमीटर मोटी बर्फ काटने भर की थी। यह समय सीमा समाप्त हो चुकी है, मगर स्पेन से मिलने वाली 'पीआरवी' का कोई अता-पता नहीं है। यह एक छोटा -सा उदाहरण है, जो यह बताता है कि देश का पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय कितना संज़ीदा है।

साउथ पोल में हम सबसे पहले 1983-84 में अपने रिसर्च स्टेशन 'गंगोत्री' के साथ उपस्थित हुए थे। चीन हमसे साल भर बाद ही वहां अवतरित हुआ। 1990 में हमारा रिसर्च स्टेशन 'गंगोत्री' बर्फ़ में विलीन हो गया। लेकिन वहां अनुपस्थित होने से पहले, शिमाख़र ओएसिस पर 'मैत्री' नामक एक दूसरा स्टेशन 1989 में और मार्च 2013 में 'भारती' नामक स्टेशन हमने बना लिया। जहां पर मैत्री स्टेशन है, वहां से कोई तीन हज़ार किलोमीटर और आगे दक्षिणी ध्रुव है, वहीं चौथे रिसर्च स्टेशन 'हिमाद्री' का निर्माण करना है। मैत्री स्टेशन से 'हिमाद्री' वाले ठिकाने तक पहुंचने के लिए जिन चार पोलर रिसर्च वैसल (पीआरवी) की ज़रूरत पड़ रही है, उसके सिर्फ़ किराये पर तीन करोड़ 60 लाख़ रुपये ख़र्च हो जाएंगे। कैसी विडंबना है, हम चले हैं अंटार्कटिका क्षेत्र में दो हज़ार साल के पर्यावरण परिवर्तन पर रिसर्च करने, लेकिन मंज़िल पर पहुंचने के लिए हमारे पास यान तक नहीं है। मई 2011 के अंतिम हफ्ते में 490 करोड़ के 'आइस क्लास रिसर्च वेसल' ख़रीदने की हामी हमारी संसदीय समिति ने भर दी थी। 60 लोगों की क्षमता वाला यह जहाज मार्च 2013 तक भारत को मिल जाना था। 'आइस क्लास वेसल' को हासिल करने के मामले में हम इतने साल सोते क्यों रहे? ऐसे सवालों का उत्तर देने में भू-विज्ञान मंत्रालय के अधिकारी आपको भूमिगत मिलेंगे। अब इसकी भी बात हो जाए कि चीन वहां 'रिसर्च' के अलावा और क्या कर रहा है। ठीक आठ साल पहले, 3 सितंबर 2011 को ओस्लो से ख़बर आई थी कि चीन ने दक्षिणी ध्रुव के बरास्ते एक नये पोलर मार्ग का विस्तार किया है। कोई डेढ़ सौ साल से इस पोलर मार्ग को बनाने का प्रयास दुनिया के विकसित देश कर रहे थे। पोलर मार्ग के खुल जाने से अमेरिका, यूरोप और एशिया की समुद्री दूरी आधी से भी कम हो जाती है। इससे सदियों से तयशुदा मिस्र के स्वेज कैनाल वाले समुद्री मार्ग से मुक्ति मिलेगी। ईंधन में प्रति खेप 1 लाख 80 हज़ार डॉलर की बचत होगी। और सबसे फायदे की बात यह कि अदन की खाड़ी, मलक्का जलडमरुमध्य के समुद्री लुटेरों से छुटकारा। इससे मिस्र को ज़बरदस्त आर्थिक नुकसान पहुंचेगा, यह तो तय जानिये। चीन ने सोमवार को 'शुएलौंग-टू' बनाने में जो सफलता हासिल की है, उससे पोलर मार्ग पर आवागमन में सबसे अधिक आसानी उसके जहाजों को होगी। सामने से या पीछे से बर्फ काटने में सक्षम जहाजों के न होने की वजह से दुनिया के विकसित देश हाथ पर हाथ धरे बैठे थे। आप बाहर से देखें तो यही लगता है कि दक्षिणी ध्रुव में सक्रिय देश पर्यावरण पर शोध कर बड़ा पुण्य का काम कर रहे हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि जब से इस निरापद महादेश का पता चला, तब से बड़ी शक्तियां यहां दबदबा बनाने, नाभिकीय परीक्षण करने और सैकड़ों मीटर बर्फ के नीचे से सोना, चांदी, कोबाल्ट, तांबा, क्रोमियम, लौह अयस्क, निकेल, लीड, टीटेनियम, यूरेनियम को उड़ा ले जाने की ताक में लगी हैं। यों 1991 में मैड्रिड संधि के तहत 2041 तक ऐसे खनिज पदार्थों के दोहन पर रोक लगा दी गई है।

चीन इस समय दुनिया भर से तेल, गैस और खनिज बटोरने के लिए भूखे ड्रेगन की भूमिका में है। इस भूखे ड्रेगन को यदि पोलर मार्ग में हिस्सेदारी मिल जाती है तो निश्चित मानिये कि चीन की यहां लाटरी लग जाएगी। चीन दक्षिणी ध्रुव पर दावेदारी ठोकने में ज़रा भी नहीं चूकेगा। रूस, नार्वे, फिनलैंड जैसे देश चीन के बहाने दक्षिणी ध्रुव में एक नई लॉबी बना रहे हैं, इसे काउंटर करने के लिए यूरोपीय संघ और अमेरिका के साथ मिलकर भारत एक नया गुट क्यों नहीं बना सकता?

कुछ घंटे गुजारिए न जेल में

जी नहीं, यह जेल पर्यटन का विज्ञापन नहीं है। जेल पर्यटन अभी शुरू नहीं हुआ है। अभी उसकी योजना बन ही रही है। उम्मीद करनी चाहिए कि यह योजना पांच साला नहीं होगी। वैसे भी योजना आयोग अब खत्म हो चुका है। अब योजनाएं नहीं, नीतियां बनती हैं। जेल से डरने की जरूरत नहीं है। वैसे भी एडवेंचर और थ्रिल भी पर्यटन का हिस्सा होते ही हैं। पर्यटन भी तो अब तरह-तरह के हो गए हैं। शासक पार्टी से पूछो तो वह विपक्ष के नेता के ही कितनी तरह के पर्यटन गिना देगी। अभी कुछ वर्ष पहले यह योजना बनी थी कि चंबल की उन जगहों को पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित किया जाएगा, जहां कभी मान सिंह और मोहर सिंह जैसे नामी-गिरामी डाकू विचरण करते थे। थ्रिल का एलीमेंट नहीं है क्या? फिर पिछले दिनों यह खबर आयी कि अब जेल पर्यटन शुरू होने जा रहा है। काला पानी तो खैर पहले ही पर्यटन स्थल के रूप में विख्यात हो चुका है। पर अब काला पानी जाने की जरूरत नहीं है।

आप अपने यहां भी जेल का लुत्फ ले सकते हैं। बस पैसा चुकाइए और जेल की हवा खाइए। जी हां, इधर यूपी से खबर यह है कि जिनकी कुंडली में जेल योग है, वे अपनी मर्जी से कुछ घंटे लॉकअप में रहकर इसका निराकरण कर सकते हैं। किसी पंडित-पुरोहित से, किसी तांत्रिक से यज्ञ-हवन कराने की कोई जरूरत नहीं। बस कुछ घंटे लॉकअप में बिताइए, यह जेल योग से बचने का एकदम पक्का उपाय है। अगर जेल योग का यह तोड़ पहले ही निकल आता तो उन बाबाओं को भी जेल नहीं जाना पड़ता जो बलात्कार और न जाने किस-किस आरोप में जेल में हैं। पर अगर उन्हें यह उपाय ही नहीं सूझा तो वे किस बात के बाबा हैं भई। खैर, अब यह तोड़ निकल आया है तो तमाम बलात्कारी और अपराधी अवश्य ही यह उपाय अपना सकते हैं। बैंकों का पैसा लेकर भाग जाने वालों को भी अब चिंता करने की जरूरत नहीं।

बस कुछ घंटे लॉकअप में बिताइए और सब रफा-दफा। अब समझिए कि माफियाओं की तो बन आएगी। वे चंद घंटे लॉकअप में बिताकर अपना माफिया राज चला सकते हैं। पर चिंता असल में यह है कि अब कानून और व्यवस्था का क्या होगा? अदालतें क्या करेंगी? वकीलों का क्या होगा? अगर किसी को जेल भेजने की सजा दे दी, तो कहीं वह ऐंठ कर उलटा यही न कह दे-मेरा तो जेल योग का निराकरण हो चुका है, आप मुझे कैसे जेल भेज सकते हैं?

दुर्घटनाग्रस्त मिराज

बहुउद्देशीय लड़ाकू विमान मिराज-2000 की बेंगलुरु में हुई दुर्घटना में दो टैस्ट पायलटों की मौत से वायुसेना और विमानों के घरेलू निर्माण कार्यों को भी आघात पहुंचा है। इस दुर्घटना ने हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (हाल) पर भी सवाल खड़े किए हैं। हादसे के शिकार मिराज की हाल ही में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (हाल) ने सर्विस तथा अपग्रेडिंग की थी। अपग्रेडिंग के बाद पायलटों ने टैस्ट के तौर पर उड़ान भरी थी ताकि इसे वायुसेना में शामिल किया जा सके, लेकिन लैंडिंग करते ही यह हादसे का शिकार हो गया। मिग-21 के हादसे अभी भी जनसाधारण की यादों से ओझल नहीं हुए हैं। हालिया महीनों में विमान हादसों की काफी खबरें सुनने को मिलीं, जिनमें जगुआर एयरक्राफ्ट, मिग-29 तथा सुखोई-30 शामिल हैं। वैसे जब से ब्रिटिश हॉक एडवांस्ड जेट ट्रेनर का आगमन हुआ है, कुल मिलाकर सालाना विमान दुर्घटनाएं अपेक्षाकृत कम हुई हैं। मिराज-2000 को पहली बार सेना में 1984 में शामिल किया गया था। कारगिल युद्ध में इसने अपनी काबिलियत के झंडे गाड़ दिए। पहाड़ी के ऊपर छिपे बैठे घुसपैठियों को पाक द्वारा की जा रही रसद व अन्य सप्लाई को इसी मिराज ने रोका। सटीक निशाने पर बम वर्षा से घुसपैठियों के हौसले पस्त हो गए। शुक्रवार को हुए क्रैश से भारतीय वायुसेना के 3 स्क्वाड्रन फ्लीट की संख्या अब 48 ही रह गयी। भारत का इस फ्लीट को अपग्रेड करने के लिए मूल निर्माता कंपनी से 2.4 बिलियन डॉलर का करार हुआ था। हाल ही में दो विमानों को फ्रांस में अपग्रेड कराया गया था। वैसे तो सारी सच्चाई छानबीन करने पर ही पता चलेगी, लेकिन 'हाल' कंपनी पर सवाल उठने लाज़िमी हैं और इस बार बात उसकी तकनीकी क्षमताओं की है। इसकी कई परियोजनाएं, जिसमें मिराज को अपग्रेड करना भी शामिल था, निर्धारित समयावधि से काफी पीछे चल रही हैं। वैसे भी इस तरह की खरीद-फरोख्त काफी राजनीतिक बवाल खड़ा करती है, इसलिए यही बेहतर होगा कि घरेलू पक्ष पुख्ता करके बाहरी देशों पर कम आश्रित रहा जाए। जब हमारी वायुसेना को ऐसे विमान उड़ाने पड़ते हैं तो यह हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के दावों की पोलपट्टी खोलते हैं।

देखन में छोटे लगें, रिटर्न दें भरपूर

आलोक पुराणिक

कारोबार की दुनिया में भी कुछ पूरे विकसित हाथी होते हैं, कुछ नवजात हाथी यानी नये पैदा हुए। प्रकृति का नियम है कि नवजात हाथी या नवजात बच्चा दोनों ही तेज गति से बढ़ते हैं। नवजात बच्चे की सालाना विकास दर 100 प्रतिशत या 200 प्रतिशत भी हो सकती है। यानी पैदा होते वक्त जो वजन था, उसका दोगुना वजन अगले साल हो सकता है। इस विकास दर को बड़े होने पर बनाये रखना मुश्किल होता है। इसलिए बड़ी कंपनियों का विकास हर साल सौ प्रतिशत की रफ्तार से नहीं हो सकता।

बड़ी कंपनियों के शेयर शायद ही एक साल में कभी सौ प्रतिशत उछलते हों। पर छोटी कंपनियों के मामले में यह संभव है क्योंकि वह विकास की शैशवावस्था में होती हैं और विकास की तेज रफ्तार में होती हैं। छोटी कंपनियों की डूबने की रफ्तार भी बहुत तेज होती है क्योंकि उनके पास संसाधनों का, ब्रांड का वैसा सहारा नहीं होता, जैसा बड़ी कंपनियों के पास होता है। इसलिए जो एक्सपर्ट, जो निवेशक छोटी कंपनियों के निवेश में महारथ हासिल कर लेते हैं, उनके रिटर्न बहुत शानदार आते हैं। पर छोटी कंपनियों में निवेश में महारथ हासिल करना बहुत मुश्किल काम है। इसकी वजह यह है कि बड़ी कंपनियों के आंकड़े, बड़ी कंपनियों से जुड़ी रिपोर्टें तो लगातार मीडिया में आती रहती हैं पर छोटी कंपनियों के बारे में जानकारियां जुटाना मुश्किल काम है। छोटी कंपनियों के प्रबंधन आम निवेशक से मिलने तक से इनकार कर देते हैं, हां म्यूचुअल फंड संयोजक, बैंक और पत्रकार उनसे मिल सकते हैं।

छोटी कंपनियों ने जिन म्यूचुअल फंड योजनाओं में विशेषज्ञता हासिल कर ली है, उनके रिटर्न बहुत शानदार रहे हैं, ऐसी ही एक म्यूचुअल फंड स्कीम का नाम है, रिलायंस स्माल कैप। यह स्कीम उस कहावत को चरितार्थ करती है-देखन में छोटे लगें, रिटर्न दें भरपूर। रिलायंस स्माल कैप ने 12 सितंबर 2018 के आंकड़ों के हिसाब से पिछले एक साल में करीब 10 प्रतिशत का रिटर्न दिया है। वैसे निवेश दीर्घकालीन होना चाहिए और रिटर्न पांच साल या इससे ज्यादा अवधि के लिए देखा जाना चाहिए। आंकड़ों के हिसाब से पिछले तीन सालों में इस फंड ने सालाना रिटर्न करीब 23 प्रतिशत का दिया है। पर पांच सालों की अवधि में देखें तो इस फंड के रिटर्न बहुत धमाकेदार हैं-हर साल करीब 38 प्रतिशत का रिटर्न। यह बात हमेशा ध्यान रखनी चाहिए कि जैसे रिटर्न अतीत में आये हैं, वैसे रिटर्न भविष्य में भी आयें, ऐसा जरूरी नहीं है। इस रिकार्ड से इस बात की पुष्टि होती है कि रिलायंस स्माल कैप फंड और रिलायंस म्यूचुअल फंड के पास छोटी कंपनियों में निवेश के लिए विशेषज्ञता जरूरी है। 31 अगस्त, 2018 के आंकड़ों के मुताबिक रिलायंस स्माल कैप के पास कुल 7618 करोड़ रुपये की निवेश योग्य रकम थी।

इस फंड का करीब 2.79 हिस्सा वीआईपी इंडस्ट्रीज में लगा है। गौरतलब है कि वीआईपी का शेयर पिछले एक साल में 135 प्रतिशत से भी ज्यादा उछल चुका है। इस फंड का करीब 2.61 फीसदी हिस्सा जायडस वेलनेस कंपनी के शेयरों में है। जायडस का शेयर एक साल में करीब 85 प्रतिशत उछल चुका है। कुल मिलाकर छोटी कंपनियों में रिटर्न बहुत जोरदार आ जाते हैं, अगर निवेश ढंग से किया गया हो तो। हां छोटी कंपनियों में निवेश की जोखिम भी ज्यादा है। इसलिए छोटी कंपनियों में निवेश सीधे करने के बजाय हमेशा म्यूचुअल फंड के जरिये ही करना चाहिए। इस फंड के निवेश योग्य फंड का करीब 1.77 प्रतिशत हिस्सा यूनाइटेड ब्रीवरीज के शेयरों में भी है। यह शेयर भी एक साल में करीब 68 प्रतिशत उछल चुका है। छोटी कंपनियों में निवेश को लेकर सबसे बड़ा मसला होता है प्रबंधन की गुणवत्ता। छोटी कंपनियां कई मामलों में पारिवारिक दुकानों का विस्तार होती हैं यानी प्रमोटर अपनी पूरी मनमर्जी चलाते हैं। प्रोफेशनल प्रबंधन के लिए काम करने का स्कोप होता है। रकम इधर-उधर होने की आशंकाएं भी कम नहीं होती हैं।

जीवन दर्शन

सफलता का राज

एक बार एक व्यक्ति सुकरात के पास आया और उनसे पूछा-सफलता का रहस्य क्या है?

सुकरात ने उससे कहा-कल तुम मुझे नदी किनारे मिलो। दूसरे दिन वह सुकरात से नदी के किनारे मिला। सुकरात उसे लेकर नदी में आगे बढ़ने लगे। वे दोनों नदी में तब तक आगे बढ़ते रहे, जब तक नदी का पानी उनके गले तक न आ गया। वहां पहुंचकर सुकरात ने उसका सिर पकड़कर पानी में डुबो दिया। पानी के भीतर सांस न आने के कारण वह पानी से बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने लगा। सुकरात ने उसे तब तक पानी में डुबोये रखा, जब तक वह शिथिल न पड़ गया। सुकरात ने उसका सिर पानी से बाहर निकाला। पानी से बाहर निकलते ही वह तेजी से सांस लेने लगा। सुकरात ने पूछा-ये बताओ, जब तुम पानी के भीतर थे, तब सबसे ज्यादा क्या चाहते थे? उसने उत्तर दिया-सांस लेना। सुकरात ने कहा-यही सफलता का रहस्य है।

- अनिल कुमार

मशीनी अवतार से अमर बनेगा मनुष्य

मुकुल व्यास

मनुष्य अनंतकाल से अमृत की तलाश कर रहा है और अब विज्ञान भी अमरत्व के नुस्खे खोजने में जुट गया है। वृद्धावस्था को रोकने या आजीवन युवा रहने के लिए कुछ रिसर्च वैज्ञानिक आधार पर हो रही हैं और कुछ बातें कल्पना लोक में तैर रही हैं। एक रूसी धनकुबेर द्मित्री इत्स्कोव अपने अति महत्वाकांक्षी अवतार प्रोजेक्ट के जरिए मनुष्य को टर्मिनेटर जैसे साइबोर्ग के रूप में अमर बनाने का सपना देख रहे हैं। उनका इरादा 2045 तक मनुष्य की चेतना को एक मशीन में हस्तांतरित करने का है, जहां उसकी पर्सनैलिटी और यादें हमेशा जिंदा रहेंगी। इस अवतार का कोई भौतिक रूप नहीं होगा। इसका अस्तित्व सिर्फ इंटरनेट जैसे नेटवर्क में होगा। इस तरह के साइबोर्ग होलोग्राम के माध्यम से अपने माहौल के साथ संवाद करेंगे। इत्स्कोव के प्रोजेक्ट में इस समय साइंस कम और साइंस-फिक्शन ज्यादा दिखता है, लेकिन वह अपने इरादों के प्रति गंभीर हैं और इसके लिए वैज्ञानिकों की भर्ती कर रहे हैं। समाज को नव-मानवता की ओर ले जाने के लिए वह संयुक्त राष्ट्र महासचिव की मदद भी मांग रहे हैं।

यह तो वक्त ही बताएगा कि इत्स्कोव अपनी योजना को कितना आगे बढ़ा पाएंगे, लेकिन भविष्य में एजिंग के दुष्प्रभावों को रोकना संभव हो सकता है। बहुत मुमकिन है कि मनुष्य का जीवनकाल बढ़ाने का कोई कारगर तरीका भी हाथ लग जाए। वैज्ञानिक एजिंग की प्रक्रिया के पीछे आणविक और आनुवंशिक कारणों को समझने की कोशिश कर रहे हैं। बर्कली स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया (यूसी) में किए गए एक अध्ययन को इस दिशा में महत्वपूर्ण सफलता मिली है, साथ ही इससे बुढ़ापे से जुड़ी बीमारियों के इलाज के नए तरीके विकसित करने की उम्मीद भी जग गई है। यूसी के रिसर्चरों ने अपने एक प्रयोग में एक बूढ़े चूहे की रक्त स्टेम कोशिका में एक दीर्घायु जीन मिला कर उसकी आणविक घड़ी को पीछे खिसका दिया। इससे बूढ़ी स्टेम कोशिकाओं में नई जान आ गई और वे फिर से नई ब्लड स्टेम कोशिकाएं उत्पन्न करने में समर्थ हो गईं। दीर्घायु जीन का नाम सर्ट-3 है। यह दरअसल सर्ट समूह का प्रोटीन है, जो ब्लड स्टेम कोशिकाओं को स्ट्रेस से निपटने में मदद करता है। प्रमुख रिसर्चर डेनिका चेन के अनुसार यह खोज बहुत रोमांचक है और इससे बुढ़ापे से जुड़ी बीमारियों के इलाज के तरीके विकसित करने का रास्ता खुल गया है। पिछले 10-20 वर्षों में वैज्ञानिकों को बुढ़ापे की प्रक्रिया को समझने में कई सफलताएं मिली हैं। वृद्धावस्था को अब अनियंत्रित और बेतरतीब प्रक्रिया नहीं माना जाता। यह बहुत ही नियंत्रित प्रक्रिया है, लेकिन इसमें फेरबदल की गुंजाइश है। चेन के मुताबिक एक अकेले जीन के म्यूटेशन या परिवर्तन से जीवनकाल बढ़ाया जा सकता है। प्रश्न यह है कि क्या हम इस प्रक्रिया को समझ कर वृद्धावस्था को सचमुच पलट सकते हैं? रिसर्चरों ने सबसे पहले ऐसे चूहों के ब्लड सिस्टम का अध्ययन किया, जिनमें सर्ट-3 प्रोटीन के जीन को निष्क्रियकर दिया गया था। रिसर्च से पता चलता है कि युवा कोशिकाओं में ब्लड स्टेम कोशिकाएं अच्छे ढंग से काम करतीहैं और उन्हें बहुत कम ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस का सामना करना पड़ता है। आक्सीडेटिव स्ट्रेस शरीर के भीतरमेटाबोलिज्म अथवा कोशिकाओं में कुदरती रासायनिक प्रक्रियाओं का एक नुकसानदायक बायप्राडक्ट है। इससेशरीर पर बोझ बढ़ता है। मेटाबोलिज्म के दौरान ऑक्सीजन का एक स्वतंत्र अणु निकलता है, जिसे फ्री रेडिकलभी कहा जाता है। इसमें इलेक्ट्रिकल चार्ज होता है। यदि इस अणु को किसी एंटी ऑक्सीडेंट से तुरंत न्यूट्रलाइजनहीं किया जाता तो यह और ज्यादा फ्री रेडिकल उत्पन्न करता है। इससे कोशिका की दीवार के प्रोटीन और यहांतक कि कोशिका के डीएनए को भी नुकसान पहुंचता है। फ्री रेडिकलों का एक्शन एक कटे हुए सेब के भूरा पड़नेया लोहे के जंग खाने जैसा ही है। शरीर पर दिखने वाले बुढ़ापे के लक्षण ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस के कारण ही होते हैं।वृद्धावस्था की कई बीमारियां भी इसी वजह से होती हैं।

युवावस्था में शरीर की एंटी-ऑक्सीडेंट प्रणाली कम स्ट्रेस को आसानी से झेल सकती है, लेकिन उम्र बढ़ने के साथहमारा सिस्टम ठीक से काम नहीं करता क्योंकि हम या तो ज्यादा ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस उत्पन्न करते हैं या उसे हटानहीं पाते। इन स्थितियों में हमारी सामान्य एंटी-ऑक्सीडेंट प्रणाली काम नहीं करती और हमें सर्ट-3 की जरूरतपड़ती है, लेकिन उम्र के साथ सर्ट-3 का लेवल भी कम हो जाता है। एंटी-एजिंग उपायों के लिए कुछ जीव-जंतुओंमें पाए जाने दीर्घायु संबंधी गुणों का भी अध्ययन किया जा रहा है। अमेरिकी और इस्राइली रिसर्चर यह पतालगाने की कोशिश कर रहे हैं कि पूर्वी अफ्रीका में पाए जाने वाले नेकेड मोल रैट के लंबे और सक्रिय जीवन काराज क्या है। चूहे के इस अनोखे रिश्तेदार में एनआरजी-1 नामक प्रोटीन की मात्रा बहुत ज्यादा पाई गई है, जोकिअसामान्य बात है। मानव शरीर की तुलना में इस चूहे के शरीर पर एजिंग का प्रतिकूल प्रभाव बहुत कम पड़ताहै। 10 से 30 साल तक जीने वाला यह जंतु अंत-अंत तक अपनी बौद्धिक क्षमता, प्रजनन शक्ति और बोन हेल्थ कोबनाए रखता है, जबकि सामान्य चूहा औसतन तीन साल में जर्जर बूढ़ा होकर मर जाता है।

कुछ वैज्ञानिक मनुष्यों को ज्यादा समय तक युवा बनाए रखने और उनके जीवन को लंबा करने के लिए फ्रूटफ्लाइज का अध्ययन कर रहे हैं। फ्रूट फ्लाइज और मनुष्यों के जीनों में करीब 60 प्रतिशत तक समानता होती है।दोनों में एजिंग की प्रक्रिया भी लगभग एक जैसी है। यूनिवर्सिटी कालेज लंदन स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ एजिंगके वैज्ञानिक बुढ़ापे से निपटने के मकसद से आनुवंशिकी और लाइफ स्टाइल फैक्टरों का अध्ययन कर रहे हैं।इंस्टीट्यूट में रिसर्च टीम से जुड़े प्रमुख वैज्ञानिक मैथ्यू पाइपर का कहना है कि यदि हमें एजिंग से जुड़े जीन मिलजाते हैं तो एजिंग की घड़ी को हम आगे खिसका सकते हैं। डॉ. पाइपर के मुताबिक फ्रूट फ्लाइज मनुष्यों की तरहही बूढ़ी होती हैं। प्रयोगशाला में जीनों के म्यूटेशन से भी कुछ जीव-जंतुओं का जीवन बढ़ाने में सफलता मिली है।जीवन को लंबा करने का एक और तरीका है आहार पर नियंत्रण। डॉ. पाइपर का कहना है कि यदि आप किसी चूहेके आहार में 40 प्रतिशत की कमी कर दें तो वह 20 या 30 प्रतिशत ज्यादा जीवित रहेगा। वैज्ञानिकों का दावा हैकि आहार पर नियंत्रण से मनुष्य का जीवन काल भी बढ़ाया जा सकता है।

डॉयलॉग बॉक्स

प्रत्येक महान एवं श्रेष्ठ साहसिक कार्य के साथ सुरक्षा की वासना लगी रहती है...

संवाद

आम पाठकों के लिए मंच प्रदान करने के उद्देश्य से अभिव्यक्ति का पन्ना आरक्षित है। आपकी पाती, समसमायिक घटनाओं पर विचार, लेख, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय मसलों पर सुधि पाठकों का नजरिया पेश करने के लिए इसे रखा गया है।

लेखक केवल महानगरों नहीं बसते हैं। बस्तर भूमि में भी माटी से जुड़े विद्वानों की कमी नहीं है। हम चाहते हैं सभी को इस पन्ने में स्थान मिले और विचारों का आदान-प्रदान हो। यह संवाद आम पाठक और अखबार के बीच कायम रहे। विचारों से बस्तर में बदलाव आए, इन्हीं कामनाओं के साथ अभिव्यक्ति का यह अंक...

-संपादक

हमारा पता : संपादक

दैनिक बस्तर इम्पेक्ट, सिटी आफिस -

एच-85/A, मां दंतेश्वरी नगर, आवराभाटा दंतेवाड़ा, पिन -494449

फोन नंबर : 07856-252024

email - editor@bastarimpact.0rg